



### **5. नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत।**

**उत्तर:-** इस पंक्ति का भाव यह है कि मधुर संगीत को सुनकर हिरन अपने प्राण तक न्योछावर करने के लिए तैयार हो जाता है और मनुष्य किसी कला पर मोहित होकर उसे धन देता है और कल्याण करता है परन्तु जो दूसरों से प्रसन्न होकर भी कुछ नहीं देता, वह नर पशु समान है।

### **6. जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि।**

**उत्तर:-** इस पंक्ति का भाव यह है कि हर-एक छोटी-बड़ी वस्तु का अपना-अपना महत्त्व होता है। जो काम सुई कर सकती है वह काम तलवार नहीं कर सकती है और जो काम तलवार कर सकती है वह कार्य सुई नहीं कर सकती अतः सबकी अपनी-अपनी उपयोगिता होती है और किसी की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

### **7. पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून।**

**उत्तर:-** इस पंक्ति का भाव यह है कि मोती में चमक न रहे तो वह व्यर्थ हो जाता है, मनुष्य का आत्म-सम्मान न रहे तो उसका जीवन बेकार है और यदि आटे में पानी ना हो तो वह खाने लायक नहीं होता। पानी के बिना ये तीनों ही उबर नहीं सकते हैं।

10. निम्नलिखित भाव को पाठ में किन पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है —

1. जिस पर विपदा पड़ती वही इस देश में आता है।

उत्तर:- जा पर विपदा पड़त है, सो आवत यह देस।

2. कोई लाख कोशिश करे पर बिगड़ी बात फिर बन नहीं सकती।

उत्तर:- बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।

3. पानी के बिना सब सूना है अतः पानी अवश्य रखना चाहिए।

उत्तर:- रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सूना।

4. उदाहारण के आधार पर पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए —

उत्तर:- उदाहारण — कोय-कोई, जै-जो

5. ज्यों, कछु, नहिं, कोय, धनि, आखर, जिय, थोरे, होय, माखन, तलवारि, सींचिबो, मूलहिं, पिअत, पिआसो, बिगरी, आवे, सहाय, ऊबरै, बिनु, बिथा, अठिलैहैं, परिजाय

**उत्तर:-**

ज्यों	जैसे
कछु	कुछ
नहिं	नहीं
कोय	कोई

धनि	धन्य
आखर	अक्षर
जिय	जीव
थोरे	थोड़े
होय	होता
माखन	मक्खन

तलवारि	तलवार
सींचिबो	सींचना
मूलहिं	मूल

पिअत	पीते ही
पिआसो	प्यासा
बिगरी	बिगड़ी
आवे	आए
सहाय	सहायक
ऊबरै	उबरे
बिनु	बिन
बिथा	व्यथा
अठिलैहैं	इठलाएगे
८	

पारजाय	पड़ जाए
--------	---------

\*\*\*\*\* END \*\*\*\*\*